इकाई–1 लोक प्रशासन : वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य

अध्याय–1
लोक प्रशासनः अध्ययन विषय के रूप में विकास
(Public Administration: Evolution as a subject of study)

आज जिस रूप में हम लोक प्रशासन का अध्ययन करते है, वह कुछ विकासात्मक प्रक्रियाओं की उपज है। इसका अर्थ यह है की हमें उन कारकों का अध्ययन और विश्लेषण करना होगा, जिसके कारण लोक प्रशासन एक विषय के रूप में विकसित हो पाया है। लोक प्रशासन का प्रयोग प्रायः दो अर्थो में किया जाता है – प्रथम ,लोक प्रशासन एक क्रिया के रूप में और द्वितीय लोक प्रशासन एक_अध्ययन विषय के रूप में, अर्थात् लोक प्रशासन एक क्रिया के रूप तथा एक स्वतंत्र विषय के रूप में दोनों हैं, अतः इसकी विकास यात्रा का वर्णन भी दोनों रूपों में किया जाता है :

(1) लोक प्रशासन एक क्रिया के रूप में :

लोक प्रशासन एक क्रिया के पहलू के रूप में उतना ही पुराना है जितना कि राजनीतिक समाज, यानि राजनीतिक निर्णयकर्त्ताओं द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यह राजनीतिक व्यवस्थाओं के साथ सहअस्तित्व कायम रखता है। सिन्धुघाटी सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि यहाँ प्रारम्भिक काल से ही सुविकसित प्रशासनिक व्यवस्था विद्यमान थी। प्राचीन यूनान के नगर–राज्यों में भी लोक प्रशासन का संगठित रूप हमें प्राप्त होता है। प्राचीन भारत में प्रशासन की कला राजशास्त्र का अंग समझी जाती थी तथा गंगा सिन्धु घाटी के ग्राम समाज, गण राज्यों तथा राजतंत्रात्मक राज्यों में हमें इस बात के प्रमाण मिलते है। कि वहाँ बहुत प्राचीन काल से एक पर्याप्त सुविकसित प्रशासकीय व्यवस्था विद्यमान थी।

(2)लोक प्रशासन एक विषय के रूप में :

एक व्यवस्थित अध्ययन क्षेत्र के रूप में लोक प्रशासन काफी नया विषय है फिर भी प्राचीन काल से ही तमाम चिन्तको नें प्रशासकीय विचार और व्यवहार में अपना योगदान दिया है। उदाहरणार्थ प्राचीन भारत में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, जिसको प्रशासन का एक प्रमाणिक ग्रंथ माना जाता है। जिसमें लोक प्रशासन विषय के तीन पहलुओं पर चर्चा की गई है यथा लोक प्रशासन के सिद्धांत, सरकारी तन्त्र और कार्मिकों का प्रबन्ध। कौटिल्य के अनुसार लोक प्रशासन की कला को तभी अपनाया जा सकता है जब वह लोक प्रशासन के विज्ञान से सुपरिचित हो । इसलिए राजा, युवराज, उच्च धर्माचार्य तथा मंत्रियों को लोक प्रशासन के विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। प्राचीन पश्चिम में अरस्तू का पॉलिटिक्स और मध्यकालीन पश्चिम में मैक्यावेली की ''द प्रिंस'' में लोक प्रशासन के संगठन और काम करने के तरीके के बारे में महत्वपूर्ण टीका–टिप्पणियों का उल्लेख मिलता है।

सोलहवीं शताब्दी में विवरणात्मक तौर से लोक प्रशासन विषय का व्यापक रूप में संकलन और अध्यापन कैमरैल विज्ञान के प्रोफेसरो द्वारा आरम्भ किया गया। कैमरेलिस्ट जर्मन तथा आस्ट्रेलियाई प्रोफेसरो एंव प्रशासको के समूह को कहा जाता है। जिन्हें सरकारी सेवाओं के लिए सक्षम उम्मीदवार तैयार करने हेतु सिविल सेवाओं से समबद्ध विषयों पर प्रगतिशील दृष्टिकोण के साथ संगठित अनुसंधान किये है।18 वीं शताब्दी के अंत में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रथम वित्त मंत्री अलेक्जेण्डर हेमिल्टन द्वारा प्रकाशित विश्वकोष ''फैडरलिस्ट'' के 72 वें परिच्छेद में लोक प्रशासन की परिभाषा और इसके विषय क्षेत्र की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। 19वीं शताब्दी के शुरू में फ्रांस ऐसा देश था जिसने लोक प्रशासन के महत्व को पहचाना और अग्रणी भूमिका निभाई। वहाँ के लेखक चार्ल्स जीन बेनिन नें सन् 1812 में "Principel D'Administration Publique" नामक इस विषय की पहली पुस्तक लिखी। लोक प्रशासन के अध्ययन को 1859 में उस समय काफी बढ़ावा मिला, जब विवेन की पुस्तक एतुदेज एदमिनीस्त्रेतित्वस के दो खण्ड प्रकाशित हुए। लोक प्रशासन विषय के विकास की दृष्टि से उपर्युक्त वर्णित सभी प्रयासों का अपना महत्व तो है। लेकिन अध्ययन–अध्यापन के स्वतंत्र विषय के रूप में इसका विकास सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रारम्भ हुआ और इसके बाद ही,इसे एक सम्पूर्ण शास्त्र का स्थान मिल सका। इसलिए इस विषय के उद्भव की खोज विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में ही करनी होगी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वतंत्र शैक्षणिक शास्त्र के रूप में लोक प्रशासन के अध्ययन के विकास में निम्न कारकों नें योगदान दिया है :

(1) सार्वजनिक क्षेत्र के कुशल कार्य निष्पादन के विषयों पर विचार संगोष्ठियों का होना।

(2) सरकारी कार्य पद्धति में सुधार के लिए आन्दोलनों का होना।

(3) सरकारी गतिविधियों के निरन्तर विस्तार तथा कुशलता व उत्तरदायित्व के प्रति, दिन–प्रतिदिन बढ़ती हुई चिन्ता।

(4)विज्ञान और तकनीकी के विकास का जनता के जीवन और सरकार के कार्यों पर पडनें वाला प्रभाव।

(5) समाज में बढ़ती हुई जटिलताओं और राज्य के कार्यों में बढ़ोतरी।

(6)वैज्ञानिक प्रबन्ध आन्दोलन जिसका समर्थन एफ.डब्ल्यू. टेलर नें किया।

(7)उन्नीसवीं सदी का औद्योगिकरण जिसनें विशाल स्तर के

संगठनों को जन्म दिया।
(8)लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का क्रमिक विकास।

एक स्वतंत्र विषय के रूप में लोक प्रशासन के अध्ययन का इतिहास लगभग 130 वर्ष पुराना माना जाता है। सामाजिक विज्ञानों में यह एक नया विषय होने के बावजूद इसमें अनेक उतार–चढ़ाव आये हैं। अध्ययन की सुगमता के लिए लोक प्रशासन के विकास के इतिहास को निम्न पाँच चरणों में बाँटा जा सकता है :

प्रथम चरण : राजनीति–प्रशासन द्विभाजन काल (1887–1926)
द्वितीय चरण : प्रशासन के सिद्धांतों का स्वर्ण काल (1927–1937)
तृतीय चरण : चुनौतियों का काल (1938–1947)
चतुर्थ चरण : पहचान की संकट का काल (1948–1970)
पंचम चरण : अन्तर्विषयक काल (1971 – वर्तमान तक)

प्रथम चरण : राजनीति–प्रशासन द्विभाजन काल (1887–1926) (Era of Politics - Administration Dichotomy)

एक स्वतंत्र शैक्षिक विषय के रूप में लोक प्रशासन का जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। इस विषय का व्यवस्थित अध्ययन शुरू करने का श्रेय वुडरो विल्सन को है, जो पहले प्रिस्टन विश्वविद्यालय अमेरिका में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर थे और बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बनें। सन् 1887 में इनका चर्चित लेख **"The Study of Administration"** राजनीतिक विज्ञान की त्रैमासिक पत्रिका (Political Science Quarterly) में प्रकाशित हुआ। इस लेख ने लोक प्रशासन के एक पृथक ,स्वतंत्र और व्यवस्थित अध्ययन की बुनियादी नींव डाली। विल्सन के अनुसार प्रशासन के अध्ययन का विकास समाज में बढती हुई जटिलताओं, राज्य के कार्यों में बढ़ोतरी और जनतांत्रिक ढाँचों में सरकारों के विकास के परिणाम स्वरूप हुआ। इसलिए वुडरो विल्सन को **''लोकप्र□ासन का जनक''** कहा जाता है। विल्सन नें प्रशासन को राजनीति से पृथक किया। उन्होनें तर्क दिया कि राजनीति का सरोकार नीति निर्माण से है। जबकि प्रशासन का सरोकार नीति निर्णयों को लागू करने से होता है।

उनके शब्दों में कि प्रशासन राजनीति के वास्तविक कार्य क्षेत्र से बाहर है। प्रशासनिक सवाल, राजनीतिक सवाल नहीं होते। यद्यपि राजनीति ही प्रशासन के लक्ष्य निर्धारित करती है,लेकिन इसे प्रशासन के कार्यालयों को प्रभावित करनें की जहमत नहीं उठानी चाहिए। विल्सन नें लोक प्रशासन का वर्णन व्यापार के एक क्षेत्र के रूप में किया। उन्होंने कहा कि ''प्रशासन का क्षेत्र व्यापार का क्षेत्र है और वह राजनीति की जल्दबाजी और संघर्षो से दूर होता है।'' विल्सन का दृढ़ निश्चय था कि प्रशासन मुख्यतः एक विज्ञान है, इसलिए उन्होंने लोक प्रशासन के एक पृथक अध्ययन का आवाह्न किया।उनका तर्क था कि ''किसी देश का संविधान बनाना एक सरल कार्य है, लेकिन ज्यादा मुश्किल काम उसे चलाना है।'' इसलिए प्रशासन का एक विज्ञान होना चाहिए,जो यह प्रयास करेगा कि सरकार सही तरह से और सरलतापूर्वक क्या करती है और यह काम कैसे सबसे कम पैसे और बल व सबसे अधिक कुशलता से किये जा सकते है।

विल्सनीय विचार पद्धति को कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कानून के प्राध्यापक फ्रेंक जे.गुडनाऊ ने 1900 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **"Politics and Administration"** में आगे बढाया। उन्होनें तर्क दिया कि राजनीति तथा प्रशासन दानों अलग–अलग है,क्योंकि राजनीति राज्य इच्छा को प्रतिपादित करती है जबकि प्रशासन इस इच्छा को क्रियान्वित करता है। विल्सन की तरह गुडनाऊ ने भी एक स्वतंत्र और पृथक अनुशासन के रूप में लोक प्रशासन को प्रोत्साहित करने की वकालत की। राजनीति और प्रशासन के द्विभाजन के संबध में उनकी इस स्पष्टता के कारण ,उन्हें अमरीकी लोक प्रशासन का जनक माना जाता है।

20 वीं सदी की शुरूआत में अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने लोक सेवा आन्दोलन (सरकारी सुधारों के लिए चलाए गए आन्दोलन) में काफी रूची दिखाई। परिणामस्वरूप लोक प्रशासन पर विद्वानों का ध्यान पहली बार गम्भीरता से गया। अमेरिकी राजनीति विज्ञान संघ नें अपनी 1914 की रिपोर्ट में कहा कि राजनीति विज्ञान का एक सरोकार सरकारी पदों के लिए विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना है। इसका यह प्रभाव पड़ा कि लोक प्रशासन को राजनीति विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग मानकर अमेरिका में लोक प्रशासन का व्यापक अध्ययन होने लगा।

सन् 1926 में एल.डी.व्हाइट की पुस्तक **"Introduction to the Study of Public Administration"** प्रकाशित हुई। जिसे लोक प्रशासन विषय की प्रथम पाठ्यपुस्तक माना जाता है। इसके प्रकाशन के साथ ही इस विषय को अकादमिक वैधता हासिल हो गई। यानि अमेरीकी विश्वविद्यालयों ने लोक प्रशासन के निर्देश पाठ्यक्रमों को उपलब्ध कराना शुरू कर दिया। व्हाइट ने अपनी इस पुस्तक में लोक प्रशासन के व्यवहारिक स्वरूप का वर्णन किया। उसने राजनीति–प्रशासन द्वैत भाव में विश्वास प्रकट किया और कहा कि लोक प्रशासन का मुख्य उद्देश्य कार्यकुशलता और मितव्ययता है।

इस प्रकार प्रथम चरण (1927–1937) की दो प्रमुख विशेषताऐं रही हैं, लोक प्रशासन का जन्म और राजनीति व प्रशासन में द्विविभाजन।

द्वितीय चरण : प्रशासन के सिद्धांतों का स्वर्ण काल (1927–1937) (Golden Era of Principles)

यह काल लोक प्रशासन के सिद्धांतों का स्वर्ण–युग माना जाता है। इस काल में एक मूल्य मुक्त प्रबन्कीय विज्ञान का विकास हुआ। जिसका प्रारम्भ सन् 1927 में डब्ल्यू.एफ.विलोबी की प्रसिद्ध पुस्तक **"Principles of Public Administration"** से माना जाता है। विलोबी ने कहा कि लोक प्रशासन में अनेक सिद्धांत होते है और इन सिद्धांतों को

क्रियान्वित करके लोक प्रशासन में सुधार किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण को आगे बढाने वाली उस समय की अन्य पुस्तक है,सन् 1924 में मेरी पार्कर फॉलेट की **"Creative Experience"** जिसमें प्रशासन में संघर्षों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। सन् 1929 में हेनरी फेयोल की **"General & Industrial management"** नामक पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया गया। जबकि वास्तविक रूप में यह पुस्तक 1916 में फ्रांसीसी भाषा में "General and Industrail Administration" के नाम से लिखी गई थी। सन् 1930 में मूने एंव रैले द्वारा रचित पुस्तक **ऑनवर्ड इन्डस्ट्री (Onward Industry)** जिसे 1939 में **"Principles of Organisation"** के नाम से प्रकाशित किया गया। सन् 1937 में लूथर गुलिक एवं एल.उर्विक नें **"Papers on the Scienceof Administration"** नामक ग्रंथ का सम्पादन किया। इसी काल में लूथर गुलिक ने प्रशासनिक कृत्यों की व्याख्या पोस्डकॉर्ब (POSDCORB) नामक शब्द में संकलित किया। लगभग इस काल के सभी विचारकों को यह दावा था कि प्रशासन के सर्वव्यापी नियमों एंव सिद्धांतों की उपस्थिति इसे विज्ञान के समक्ष स्थापित करती है और इस चरण के दौरान लोक प्रशासन अपनी प्रतिष्ठा के शीर्ष स्थान पर पहुँचा।

तृतीय चरण : चुनौतियों का काल (1938–1947) (Era of Challenges)

यह काल लोक प्रशासन के विकास में आलोचनाओं और चुनौतियों का रहा। इस चरण का मुख्य विषय था लोक प्रशासन के अध्ययन में मानवीय सम्बंधों पर जोर देना। इस चरण का प्रारम्भ द्वितीय चरण में प्रतिपादित यान्त्रिक दृष्टिकोण के विरूद्ध हुई प्रतिक्रिया से हुआ । प्रशासन के तथाकथित सिद्धांतों को चुनौती दी गई और इन्हें कहावतें कहा जाने लगा। इस सम्बध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान प्रसिद्ध हॉथोर्न प्रयोगों का रहा। सन् 1938 में चेस्टर आई.बर्नार्ड की पुस्तक **"The Functions of the Executive"** प्रकाशित हुई। उन्होने अपनी रचना में प्रशासनिक सिद्धांतों की अवहेलना की । बर्नार्ड वे प्रथम विद्वान है जिन्होंने संगठन को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं पर मानवीय तत्वों के प्रभावों को विश्लेषित करनें का प्रयास किया।

सन् 1945 में हर्बर्ट साइमन की पुस्तक **"Administrative Behaviour"** प्रकाशित हुई। जिसमें उन्होनें यह भली–भाँति सिद्ध किया कि प्रशासन में सिद्धांत नाम की कोई चीज नही होती है। सन् 1947 में रॉबर्ट ड्हाल ने अपने लेख **"The Science of Public Administration : Three Problems"** में कहा कि लोक प्रशासन विज्ञान नही है, उन्होने लोक प्रशासन द्वारा सिद्धांत की खोज में तीन बाधाओं का उल्लेख किया– (क) विज्ञान मूल्य शून्य होता है जबकि प्रशासन में मूल्य बहुलता है (ख) मनुष्यों के व्यक्तित्व अलग–अलग होते है,जिससे प्रशासन के कार्यो में विभिन्नता आ जाती है। (ग) सीमित राष्ट्रीय एंव ऐतिहासिक सन्दर्भों के आधार पर सार्वभौमिक सिद्धान्तों का निर्माण करना।

चतुर्थ चरण : पहचान की संकट का काल (1948–1970) (Era of Crisis of Identity)

साइमन द्वारा आलोचना के परिणामस्वरूप सिद्धांतवादी विचारधारा पूर्णतः धाराशाही हो गई। यहाँ तक कि विषय के अस्तित्व का ही खतरा उत्पन्न हो गया। लोक प्रशासन कोई एक स्वतंत्र विषय है या नहीं,इस पर भी वाद–विवाद होने लगा। इस कारण लोक प्रशासन के इतिहास में इस काल को स्वरूप की संकटावस्था (Crisis of Identity) के नाम से जाना जाता है। संकट के इस चरण में कुछ विद्वान लोक प्रशासन से पुनः राजनीति विज्ञान की तरफ लौट आये, क्योंकि लोक प्रशासन विषय का विकास राजनीति विज्ञान से अलग होकर ही हुआ था। इस काल का महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि लोक प्रशासन विषय जहाँ एक ओर पृथक पहचान खो रहा था,वहीं लोक प्रशासन के क्षेत्र में तुलनात्मक लोक प्रशासन एंव विकास प्रशासन का उद्गम हुआ।

रॉबर्ट ड्हाल ने कहा कि जब तक लोक प्रशासन का अध्ययन तुलनात्मक नहीं होता,तब तक इसका विज्ञान होने का दावा खोखला है। तुलनात्मक लोक प्रशासन की अवधारण को अधिक समृद्ध बनाने में फ्रेड रिग्ज, रिर्चड गेबल, फ्रेडरिक क्लीवलैण्ड, एलफ्रेड डायमेण्ट, फैरेल हैडी, शेरवुड, जॉन माण्टगोमरी आदि विद्वानों नें महत्वपूर्ण योगदान दिया। सर्वप्रथम 1948 में तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन को स्वतंत्र विषय के रूप में अमेरिका के केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में प्रारम्भ किया गया।इसका श्रेय प्रो.ड्वाइट वाल्डो को जाता है। **Comparative Administration Group** की स्थापना 1963 में **American Society for Public Administration** द्वारा की गई।

सन् 1950–1960 के दशक के बीच लोक प्रशासन के क्षेत्र में विकास प्रशासन की अवधारणा विकसित हुई। सर्वप्रथम एडवर्ड डब्ल्यू. वाइडनर नें विकास प्रशासन की अवधारणा को प्रतिपादित किया। उन्होनें विकास प्रशासन को ''कार्योन्मुख एंव लक्ष्योन्मुख'' प्रशासनिक प्रणाली के संदर्भ में परिभाषित किया। विकास प्रशासन नामक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एक भारतीय प्रशासक यू.एल.गोस्वामी द्वारा किया गया । इसका प्रयोग उनके लेख **दि स्ट्रक्चर ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया,** जो इंडियन जरनल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में 1955 में प्रकाशित हुआ। विकास प्रशासन के विश्व विख्यात प्रतिपादक जॉर्ज ग्राण्ट है। जिनका नाम टेनिस वैली परियोजना से जुडा हुआ है। उनकी पुस्तक **विकास प्रशासन : अवधारणा, लक्ष्य और पद्धति** 1979 में प्रकाशित हुई। औपनिवेशिक प्रशासन से मुक्त हुए देशों की विकास नीतियों और कार्यक्रमों की दिशा औद्योगिकरण और आधुनिकीकरण के द्वारा लोगों के जीवन स्तर में सुधार लानें,सामाजिक सेवाओं और सांस्कृतिक गतिविधियों एंव राजनितिक संस्थाओं के विस्तार की ओर रही है। इन उद्देश्यों की पूर्ति में लगे प्रशासनिक तंत्र को विकास प्रशासन की संज्ञा दी गई। विकास प्रशासन को स्पष्ट करनें में वाइडनर, रिग्ज़, फैरल हैडी , मौंटगोमरी, लुइस पाई, वॉटरसन, फेनसोड, इर्विंग, स्वैंडलों तथा पाई पनन्दिकर आदि प्रमुख विद्वानों ने

विकास प्रशासन की संकल्पना को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में अपने–अपने तरीके से परिभाषित किया, किन्तु वे एकमत से यह स्वीकार करते हैं कि विकास प्रशासन का तात्पर्य –सामाजिक अर्थतंत्र का योजनाबद्ध परिवर्तन है।

पंचम चरण : अन्तर्विषयक काल (1971 से वर्तमान तक) (Era of Inter-Disciplinary Study)

इस काल में लोक प्रशासन विषय की सर्वांगीण उन्नति हुई तथा इस बीच लोक प्रशासन का अन्तर्विषयक दृष्टिकोण उभर कर सामने आया तथा लोक प्रशासन के अध्ययन में अन्तर्विषयी सहयोग व अध्ययन पर जोर दिया जाने लगा। अनेक विषयों के विद्वान लोक प्रशासन में आकर उसका अध्ययन व सेवा करने में लग गये। इस चरण का मुख्य विषय लोक नीति विश्लेषण का सरोकार था,इसलिए राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, प्रबन्धशास्त्र के साथ लोक प्रशासन के गहरे सम्बध स्थापित हुए। विश्व में प्रशासन के व्यवहारिक अनुभवों नें राजनीति और प्रशासन के द्विभाजन की समाप्ति करते हुए, इन दोनों के निकट सम्बध स्थापित होनें से नीतियों के विश्लेषण की प्रवृति आसान हो सकी।

1968 के पश्चात् लोक प्रशासन के क्षेत्र में नवीन विचारों का सूत्रपात हुआ–नैतिकता, सामाजिक उपयोगिता, प्रतिबद्धता, विकेन्द्रीकरण, प्रतिनिधित्व मूल्यों पर आधारित, परिवर्तन, निर्णय निर्माण में जन सहभागिता, सामाजिक समता, ग्राहकोन्मुखता एंव प्रासंगिकता आदि। इन्हीं नवीन विचारों को नवीन लोक प्रशासन की संज्ञा दी गई। नवीन लोक प्रशासन के विकास के उत्तरदायी तत्व निम्नलिखित है :

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका में सार्वजनिक सेवाओं संबधी उच्च शिक्षा पर **''हनी प्रतिवेदन'', 1967**

(2) अमेरिका में आयोजित ''लोक प्रशासन के सिद्धांत और व्यवहार पर **फिलाडेल्फिया सम्मेलन'' 1967**

(3) **प्रथम मिन्नोब्रुक सम्मेलन, 1968**

(4) फ्रेंक मेरीनी द्वारा सम्पादित रचना **Towards New Public Administration:Minnowbrook Perspective, 1971**

(5) ड्वाइट वॉल्डो द्वारा सम्पादित पुस्तक **Public Administration in The Time of Turbulance, 1971**

नवीन लोक प्रशासन के चार प्रमुख लक्ष्यों–प्रासंगिकता (Relevance), मूल्य (Value), सामाजिक समता (Social Equality) एंव परिर्वतन (Change) पर बल दिया गया है। इसका सविस्तार वर्णन निम्न प्रकार से है :

(अ) प्रासंगिकता (Relevance) :

प्रासंगिकता शब्द लोक प्रशासन की वर्तमान परिस्थितियों में उत्पन्न समस्याओं से जूझने की क्षमता की ओर संकेत करता है। 1960 के दशक में परिस्थितियों के अनुसार लोक प्रशासन की क्षमता के सिद्धांतों पर अनेक मौलिक प्रश्न उठाये गये तथा सामाजिक और राजनीतिक विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन की उपयोगिता आदि प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार किया गया। परम्परावादी लोक प्रशासन अमेरीकी समाज के संकट को समझनें में असफल सिद्ध हुआ। आर्थिक, सामाजिक एंव राजनीतिक संकटों से उत्पन्न नई मांगों और चुनौतियों का सामना करने में यह अपने आप को असमर्थ पा रहा था। परम्परागत लोक प्रशासन के कार्यकुशलता और मितव्यता के लक्ष्य अपर्याप्त लगनें लगे। यह कहा गया कि इस विषय के पास समकालीन समाज की समस्याओं से निपटने की क्षमता ही नहीं रही। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार यह विषय ही अप्रांसगिक लगने लगा। लोक प्रशासन की क्षमता के बारे में मिन्नोब्रुक सम्मेलन में निम्नलिखित प्रश्न उठाये गये :

(1) सामाजिक व राजनीतिक विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन के क्या–क्या उपयोग हैं ?

(2) लोक प्रशासन की दक्षता और मितव्ययता क्यों ?

(3) हम चयन के लिए किस स्तर के निर्णयों का प्रयोग करते है ? किस तरह के प्रश्नों का अध्ययन होना चाहिए,तथा उनका अध्ययन कैसे किया जाये ?

(4) लोक प्रशासन हमारी प्राथमिकताओं और प्रश्नों को कैसे तय करता है ?

(5) लोक प्रशासन के ज्ञान के सामाजिक और नैतिक निहितार्थो से हम किस सीमा तक परिचित है?

(6) क्या वर्तमान समय में लोक प्रशासन वैसा ज्ञान प्रदान करता है जो समाज में कुछ संस्थाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके?

नये आन्दोलन नें सार्वजनिक जीवन की वास्तविकताओं की तरफ उन्मुख अर्थपूर्ण अध्ययन को सुसाध्य बनाने के लिए विषय की कार्य सूची में आमूल–चूल परिर्वतन करने की मांग की।

(ब) मूल्य (Values) :

नवीन लोक प्रशासन स्पष्ट रूप से आदर्शात्मक है।यह परम्परागत लोक प्रशासन के मूल्य तटस्थ रूख को अस्वीकार करता है। मिन्नोब्रुक सम्मेलन के सहभागियों नें यह स्पष्टतः कहा कि मूल्य के प्रति तटस्थ लोक प्रशासन असंभव है। उन्होनें इस बात पर बल दिया कि प्रशासन को उन्हीं मूल्यों को अपनाना चाहिए जो समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान करें, साथ ही कमजोर वर्गो के हितों की रक्षा कर सके।

(स) सामाजिक समानता (Social Equality) :

सामाजिक समानता के विचारों का विस्तार ही लोक प्रशासन का मौलिक आधार है तथा नवीन लोक प्रशासन ने इस बात पर जोर दिया है कि लोक प्रशासन समाज के दलित एंव वचिंत वर्ग के लोगों की आर्थिक, सामाजिक एंव मनोवैज्ञानिक पीड़ा को समझनें और उनके कष्टों के निवारण हेतु उचित कदम उठाये।परम्परागत लोक प्रशासन यथास्थितिवादी है जबकि नवीन लोक प्रशासन समाज के कमजोर वर्गों अर्थात् महिलाओं, बच्चों और दलितों को सामाजिक न्याय प्रदान करानें के प्रति संवेदनशील रहता है फ्रेडरिक्सन नें सामाजिक समानता की व्याख्या काफी साहस के साथ करते हुए कहते है कि जो लोक प्रशासन अल्पसंख्यकों के पिछड़ेपन को दूर करने वाले परिर्वतन को लाने में असफल रहता है, अंततः उसका उपयोग इन अल्पसंख्यकों के शोषण में ही किया जाता है।

(द) परिर्वतन (Change) :

नवीन लोक प्रशासन समाज में परिर्वतन लाने के औजार के रूप में कार्य करता है। मिन्नोब्रुक सम्मेलन ने परिर्वतन को संस्थागत बनाने और बड़े संस्थानों की नौकरशाही प्रवृति पर अंकुश लगानें के उपायों को खोजा। नवीन लोक प्रशासन यथा स्थिति बनाने की नौकरशाही की प्रकृति को उचित नहीं मानता। यह समाज में यथास्थितिवाद, शोषण, सामाजिक और आर्थिक विषमता को समाप्त करके समता और शोषण विहीन नए समाज की स्थापना पर बल देता है।

निष्कर्ष के तौर पर नवीन लोक प्रशासन,परम्परावादी लोक प्रशासन की अपेक्षा कम जातिगत और अधिक सार्वजनिक होना चाहिए।यह वर्णनात्मक कम और निर्देशात्मक तथा अनुशासनात्मक ज्यादा है। यह संस्थागत कम तथा अपने से जुडे उपभोक्ताओं के प्रभावों की तरफ अधिक उन्मुख है।यह तटस्थ कम और मूल्यपरक ज्यादा है और यह भी आशा की जाती है कि उसका दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक होगा।

लोक चयन दृष्टिकोण (Public Choice Approach) का प्रमुख समर्थक विन्सेन्ट ऑस्ट्राम है।यह उपागम उपभोक्ताओं तथा व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप लोक प्रशासन के सिद्धांतों के सृजन का एक प्रयास है। यह दृष्टिकोण प्रशासन की नौकरशाही पर आधारित पद्धति की आलोचना करता है। तथा नागरिक सेवा तथा सार्वजनिक सुविधाओं के लिए संस्थागत बहुलतावाद की संभावनाओं पर जोर देता है। संस्थाओं और शासनात्मक संगठनों की बहुलता का यह उपभोक्ता की पसन्द–नापसन्द के आधार का समर्थन करता है।

आलोचनात्मक सिद्धांत का प्रमुख सर्मथक जर्गेन हैबरमॉस है। यह सिद्धांत एक संगठन में सत्ता की परिस्थितियों एंव निरर्भता के विषय में जाँच पड़ताल करता है। और सोपानात्मक सम्बधों में अन्तर्निहित विरोधों को उत्पन्न करने का प्रयास करता है। आलोचनात्मक सिद्धांत ने लोक प्रशासन को मानवीय बनाने पर जोर दिया।

सन् 1980–90 के दशक में लोक प्रशासन के क्षेत्र में एक नवीन परिर्वतन हुआ कि पश्चिमी देशों की सरकारों नें अपना अनुकूलन नयी प्रौद्योगिकी, नवीन सामाजिक मांगों तथा तीव्र प्रतिस्पर्धा के अनुसार कर लिया। इससे एक नये किस्म के लोक प्रशासन की जरूरत पैदा हुई है। जिसे हम नव–लोक प्रबन्धन (New Public Management) के नाम से जानते है। सबसे पहले नव–लोक प्रबन्ध शब्द का प्रयोग क्रिस्टोफर हुड नें किया था और बाद में इस दिशा में योगदान करनें वाले विद्वानों में गेराल्ड केडन, पी.हैगेट, सी.पौलिट, आर.रोड्स, एल. टेरी इत्यादि प्रमुख है। इस नव–लोक प्रबन्ध परिप्रेक्ष्य का जोर तीन E को प्राप्त करना है : Efficiency (कार्यकुशलता), Economy (मितव्ययिता) एंव Effectiveness (प्रभावशीलता)। नव–लोक प्रबन्ध की प्रमुख विशेषताऐं नीति के स्थान पर प्रबन्धन पर जोर, सक्षमता, किफायतीपन, प्रभावकारीता, प्रतियोगिता, अनुबन्ध, कार्य निष्पादन का मूल्यांकन, प्राधिकारों का विकेन्द्रीकरण एंव बाजार आधारित तन्त्रों को वरीयता देना आदि।

द्वितीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन,1988 से प्रभावित होकर डेविड ऑसबोर्न तथा टेड गैब्लर नें सन् 1992 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **"सरकार का पुर्नान्वेशण (Reinventing Government)"** में नव–लोक प्रबन्ध के लिए दस सूत्री कार्य योजना प्रस्तुत की, जो निम्नलिखित है :

(1) उत्प्रेरक सरकार (Catalystic Government) : सरकार को सेवाऐं प्रदान करते रहने की बजाए सामाजिक समस्याओ को हल करनें के लिए सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र और स्वयं सेवी/गैर सरकारी क्षेत्र को हरकत में आने के लिए उत्प्रेरित करना चाहिए।

(2) सामुदायिक स्वामित्व की सरकार (Community owned Government) : नौकरशाही के नियंत्रण को कम या समाप्त करके नागरिकों, परिवारों और समुदायों इत्यादि को अपनी समस्याओं का समाधान स्वंय करने के लिए अधिक सशक्त बनाने पर बल दिया जाना चाहिए।

(3) प्रतिस्पर्धात्मक सरकार (Competitive Government) : सरकार को दक्षता और मितव्ययता पर प्रोत्साहन देकर विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के दाताओं के बीच प्रतियोगिता पैदा करनी चाहिए। यह प्रर्दशन को बेहतर करता है और लागत को कम करता है।

(4) अभियान–संचालित सरकार (Mission Driven Government) : सरकार को अपनें लक्ष्यों से संचालित होना चाहिए न कि कायदे –कानूनों से।

(5) परिणोन्मुखी सरकार (Results Oriented Government) : सरकार को लक्ष्य प्राप्ति और अभियान–निर्देशित प्रयासों द्वारा परिणाम हासिल करने चाहिए। सरकार अपनी प्रशासनिक अभिकरणों की उपलब्धि का मूल्यांकन मूलतः निर्गतों के अधार पर करना चाहिए न कि आगतों से।

(6) ग्राहकोउन्मुखी सरकार (Customer Oriented Government) : सरकार को अपनें ग्राहकों को उपभोक्ता समझना चाहिए। उनके लिए अनेकानेक विकल्प प्रस्तुत करने चाहिए। उनके रूखों का सर्वेक्षण करना, सेवाओं को सुविधाजनक बनाना और उनके सुझावों का स्वागत करना आदि क्योंकि भारत में ग्राहक को परमेश्वर कहा गया है।

(7) उद्यमीं सरकार (Enterprising Government) : सरकार को केवल धन खर्च करने की ही नहीं सोचना चाहिए,बल्कि धनार्जन पर जोर देना चाहिए। इसे शुल्क, बचत, उद्यम मद आदि का इस्तेमाल कर संसाधन जुटाने में अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए।

(8) पूर्वानुमानी सरकार (Anticipatory Government) : सरकार समस्या उत्पन्न होने पर सक्रिय होती है।इसके बजाय सरकार को चाहिए कि समस्या उठनें ही नहीं दे।इस प्रकार सरकार को जरूरतें पूरी करने से पूर्व उन्हे पैदा होने से रोकना चाहिए।

(9) विकेन्द्रित सरकार

(Decentralised Government) : प्राधिकार का विकेन्द्रकरण आवश्यक है और सहभागिता पर आधारित प्रबन्ध को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(10) बाजार उन्मुखी सरकार (Market oriented Government) : इस समय अनेक सेवाऐं सरकार स्वंय संचालित करती है। अच्छा यह हो कि समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए सरकार को बाजार–पद्धति अपनानी चाहिए न कि नौकरशाही पद्धति।

इस पुस्तक ने लोक प्रशासन के विद्वानों को कुछ सोचने के लिए विवश कर दिया कि आज नौकरशाही के जुल्मों से सभी परेशान है। शासकीय सेवाओं में आने के पश्चात् कोई भी अपने कर्तव्य व उत्तरदायित्व के साथ काम नहीं करना चाहता। नौकरशाही से छुटकारा दिलाने की दिशा में सरकार का पुनरान्वेषण एक साहसिक कदम है।

सन् 1994 में कनाडा के शहर शर्लोट में राष्ट्र मण्डलीय देशों नें लोक प्रशासन और प्रबन्धन पर केन्द्रित एक सम्मेलन का आयोजन किया। जिसका विषय था : संक्रमण से गुजरती सरकार। इसमें यह स्वीकार किया गया कि नव–लोक प्रबन्ध आज की हकीकत है लेकिन राज्य को उन निजी ताकतों से मिल रही चुनौती गम्भीर है जो व्यापारिक, व्यावसायिक स्वायत्ता के लिए निरन्तर दबाव बनाये हुए है। वस्तुतः इस सम्मेलन की चिन्ता आज लगभग 22 वर्षों से अधिक पुरानी हो गयी है और हम देख सकते है वर्तमान में यह व्यर्थ हो चुकी है। नव–लोक प्रबन्ध के इस वर्चस्व में भी राज्य सुरक्षित है और वह जनहित में इसका विकल्प ला सकता है। भारत में अधारभूत संरचना के विकास के साथ उपभोक्ता बाजार का विकास गत दशक में जितनी तेजी से हुआ है उसनें जनता की दृष्टि भी बदल दी है।

सिराक्यूज विश्वविद्यालय अमेरिका द्वारा आयोजित तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन सन् 2008 में दो चरणों में सम्पन्न हुआ। जिसकी थीम–भविष्य का लोक प्रशासन, भविष्य का लोक प्रबन्धन एवं भविष्य की लोक सेवाऐं रखी गई। सम्मेलन की अध्यक्षता **रोजमैरी ऑलियरी (Rosemary O'leary)** के द्वारा की गई। सम्मेलन के दूसरे चरण में सभी विद्वान इस बात से सहमत थे कि लोक प्रशासन को भविष्य में मिलने वाली चुनौतियों से निपटनें एवं उनके प्रभावी समाधान हेतु एक वैश्विक स्तर का जर्नल का प्रकाशन हो। जिसका नाम Journal of Public Administration Research and Theory (JPART) रखा गया तथा जिसका प्रकाशन 2009 से प्रारम्भ किया गया।

सन् 2010 में रोजमेरी ऑलीयरी, डविड एम.वान. स्लीके एंव सून्ही कीम द्वारा सम्पादित पुस्तक "The Future of Public Administration Around the World : The Minnowbrook Perspective" प्रकाशित हुई जिसमें तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन व वर्तमान लोक प्रशासन के कार्य क्षेत्र की समस्याओं और समाधान पर विस्तृत व्याख्या मिलती है।

तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन 2008 की प्रमुख विशेषताऐं निम्नलिखित है :

(1) सम्मेलन ऐसे समय में आयोजित हो रहा था जब अमेरिकी अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही थी और वैश्विक आतंकवाद चरम सीमा पर था।

(2) सम्मेलन का मुख्य फोकस संरचनात्मक और कार्यात्मक सुधारों के साथ दुसरी पीढी के सुधारों पर केन्द्रित था।

(3) इस सम्मेलन में 3 E मितव्ययता (Ecomony), दक्षता (Efficiency) और प्रभावशीलता (Effectiveness) की अवधारणा का जन्म हुआ।

(4) सम्मेलन का आयोजन दो चरणों में सम्पन्न हुआ। एक में लोक प्रशासन के युवा एंव उभरे विद्वान तो दुसरे मे अनुभव प्राप्त विद्वान शामिल हुए।

(5) सम्मेलन में लोक प्रशासन की एक नई परिभाषा ''लोक प्रशासन, सभी के लिए मानव उत्कर्ष को बढावा देने के संबंध, संवाद और कार्यवाही की एक सामाजिक रूप से सन्निहित (Embedded) प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है।'' दी गई।

(6) सम्मेलन में भविष्य का लोक प्रशासन की विश्व स्तर पर चर्चा की गई।

(7) इस सम्मेलन में विश्व के सभी देशों के प्रमुख लोक प्रशासन के विद्वानों को आमंत्रित किया गया क्योंकि आज विश्व स्तर पर लोक प्रशासन की चुनौतियॉ एंव समस्याओं का सामना हो रहा है।

(8) सम्मेलन रोजमैरी ऑलीयरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

(9) इस सम्मेलन के नतीजे अभी तक जारी हो रहे है।

(10) यह सम्मेलन शान्ति व मधुर सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ सम्पन्न हुआ।

वर्तमान में लोक प्रशासन को सुशासन (Good Governance) बनाने पर जोर दिया जा रहा है।शिकागो विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री मिल्टन फ्राइडमैन ने इस अवधारणा को प्रचलित किया कि अच्छे शासन के लिए आवश्यक है कि सरकार की सीमित भूमिका हो। सुशासन, सरकार की गुणवत्ता को प्रर्दशित करने वाली अवधारणा है। सामान्यतः सुशासन का अर्थ सरकार की ऐसी शासन व्यवस्था से है,जो नागरिकों के हितों की उचित समय पर तथा प्रभावशाली तरीके से सुरक्षा कर सके, साथ ही सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी रहते हुए कुशल सेवाऐं नागरिकों को प्रदान करा सकें। वास्तव में सुशासन में संवेदनशीलता, पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, जवाबदेयता, नागरिकोन्मुख, मित्रवत, उद्यमशीलता, जनसहभागिता, विधि का शासन, नैतिकता, सदाचार, ईमानदारी, दक्षता, निष्पक्षता, प्रभावी सूचनातंत्र, लचीलापन एंव वचनबद्धता इत्यादि तत्व सम्मलित है।

भारत में लोक प्रशासन का अध्ययन विषय के रूप में विकास :
(Evolution of Public Administration as a Discipline in India)

एक प्रक्रिया के रूप में भारत में लोक प्रशासन का इतिहास उतना ही पुराना है।जितना कि सिन्धु घाटी की सभ्यता

का है। सदियो पुरानें भारत के इतिहास में जिस प्रकार अनेक प्रकार के शासन और राजनीतिक व्यवस्थाऐं आयीं और गई उसी प्रकार उनके अपने प्रशासन और प्रशासनिक व्यवस्थाओं का उतार–चढाव भी मिलता रहा। भारतीय इतिहास का हिन्दू युग जिस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से उन्नत और विकसित माना जाता है, उसी प्रकार हिन्दू युग का प्रशासन भी भारतीय इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय है। वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था प्राचीन प्रशासनिक व्यवस्था का एक सुधरा हुआ एंव विस्तृत रूप है। भारत में प्रशासनिक अध्ययन की शुरूआत औपचारिक निर्देशों से हुई। अंग्रेज लेखकों नें भारत में ईस्ट इडिया कम्पनी, ब्रिटिश प्रशासन, भारतीय सिविल सेवा, जिला प्रशासन जैसे विषयों पर श्रेष्ठ शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

भारत में एक विषय के रूप में लोक प्रशासन के अध्ययन की शुरूआत स्थानीय सरकार से सम्बन्धित प्रश्न पत्र के रूप में हुई। अतः लोक प्रशासन के प्रारम्भिक शिक्षक वे लोग थे,जिन्होनें राजनीति विज्ञान के शिक्षक के रूप में स्थानीय स्वशासन में विशेषज्ञता हासिल की थी। यहॉ वी.के एन.मेनन का उल्लेख किया जा सकता है। 1924 में उन्होनें लखनऊ विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग में कार्यभार संभाला था और लोक प्रशासन उनका विशेष कार्यक्षेत्र था उनके नेतृत्व में लखनऊ विश्वविद्यालय भारत का ऐसा पहला विश्वविद्यालय बना, जिसने चौथे दशक में राजनीति विज्ञान के एक प्रश्न पत्र के रूप में लोक प्रशासन को शामिल किया।

अध्ययन के एक विषय के रूप में लोक प्रशासन के स्वरूप में उस समय अधिक निखार आया, जब विश्वविद्यालय परिसर में राजनीति विज्ञान के तहत इसमें डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया गया। देश में सबसे पहले सन् 1937 में मद्रास विश्वविद्यालय नें लोक प्रशासन में डिप्लोमा शुरू किया। एक वर्ष बाद इलाहबाद विश्वविद्यालय ने स्थानीय स्वशासन विषय में डिप्लोमा शुरू किया। इसके लिए प्रारम्भिक प्रयास स्व.बेनी प्रसाद ने किया था। सन् 1945 में लखनऊ विश्वविद्यालय व सन् 1949 में नागपुर विश्वद्यिालय ने स्थानीय स्वशासन में डिप्लोमा शुरू किया।

सन् 1949–50 में नागपुर विश्वविद्यालय में लोक प्रशासन व स्वशासन पर एक अलग सम्पूर्ण विभाग स्थापित करनें वाला भारत का पहला विश्वविद्यालय बना। इसके साथ ही भारत में लोक प्रशासन को पहली बार पूर्ण अकादमीक वैधता प्रदान की गई। इस विभाग के अध्यक्ष **स्व.डॉ. महादेव प्रसाद शर्मा** थे, जो भारत में लोक प्रशासन के पहले प्रोफेसर जानें जाते है। उन्हे **भारतीय लोक प्रशासन का जनक** भी कहा जाता है।

सन् 1954 में भारत में लोक प्रशासन पर पॉल. एच. ऐपल्बी रिपोर्ट (1953) के सुझाव पर नई दिल्ली में भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (IIPA) की स्थापना की गई। इस संस्थान को खोलने का मुख्य उद्देश्य लोक प्रशासन विषय पर अध्ययन–अध्यापन शोध, परीक्षण और प्रकाशन करना था। यह भारत का प्रशासकीय शोध कार्यों व लोक प्रशासन विषय के साहित्य उपलब्धता के रूप में सर्वश्रेष्ठ केन्द्र माना जाता है। संस्थान द्वारा इडियन जनरल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन नामक उच्च कोटि की पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। जो देश में लोक प्रशासन में रूचि रखने वाले व्यक्तियों के बीच विचार–विमर्श तथा ज्ञान के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम बन गया है।

सन् 1959 में लखनऊ विश्वविद्यालय में वी.के.एन.मेनन के प्रयासों से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। उस्मानिया और पंजाब विश्वविद्यालय ने भी जल्दी ही इसका अनुसरण किया और दोनों ही में 1961 में अलग से लोक प्रशासन विभागों की स्थापना हुई और स्नातकोत्तर उपाधि के लिए शिक्षण व्यवस्था शुरू की गई।

सन् 1975 में राजस्थान विश्वविद्यालय ने लोक प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। अधिकांश विश्वविद्यालयों में जहॉ इस विषय की शुरूआत राजनीतिविज्ञान विभाग के साथ हुई, वहीं राजस्थान में इस विषय की विकास यात्रा अर्थशास्त्र विभाग में प्रारम्भ हुई।राजस्थान विश्वविद्याालय में अर्थशास्त्र के भूतपूर्व प्रोफसर एम.बी.माथुर , जिन्होंने इग्लैण्ड से लोक प्रशासन में स्नातकोर डिप्लोमा प्राप्त कर रखा था, ने इस विषय को प्रारम्भ करनें में विशेष रूचि दिखाई। प्रो.माथुर को राजस्थान राज्य में लोक प्रशासन के जनक के रूप में जाना जाता है। आपके नेतृत्व में अर्थशास्त्र विभाग का नाम बदलकर अर्थशास्त्र एंव लोक प्रशासन विभाग रखा गया। सन् 1959 में राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रथम दल स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करके निकला था।राजस्थान विश्वविद्यालय में लोक प्रशासन को स्वतंत्र विभाग का दर्जा 1965 में मिल पाया। इस विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1971 में इस विषय में पहली बार पी–एच.डी की उपाधि प्रदान की गई।

सन् 1987 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा प्रतियागी परीक्षा के वैकल्पिक विषयों की सूची में लोक प्रशासन को स्वतंत्र विषय की सूची में शामिल किया गया। इससे इस विषय को जबर्दस्त संवेग मिला। आज भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में लोक प्रशासन विषय का स्नातक व स्नातकोत्तर स्तरों पर अध्ययन–अध्यापन करवाया जा रहा है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. सोलहवीं शताब्दी के जर्मन–आस्ट्रिया के प्रोफेसरों तथा प्रशासको के समुह को कैमरेलवादी कहा जाता है। जिन्होनें व्यापक रूप से लोक प्रशासन के अध्यापन का कार्य किया। शब्द कैमरेलिस्ट का अर्थ ऐसे व्यक्तियों से था जिन्हें अच्छे प्रबन्ध को सुनिश्चित करनें के बारे में आवश्यक सभी अथवा कुछ बातों के बारे में मौलिक एंव विशिष्ट ज्ञान प्राप्त हो।
2. अलैक्जैण्डर हैमिल्टन द्वारा प्रकाशित विश्वकोष **''फैडरलिस्ट''** के 72 वें परिच्छेद में लोक प्रशासन की परिभाषा और इसके विषय क्षेत्र की विस्तृत व्याख्या की है।
3. अध्ययन–अध्यापन के स्वतंत्र विषय के रूप में लोक प्रशासन का सर्वप्रथम विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रारम्भ हुआ।
4. सन् 1987 से वर्तमान तक लोक प्रशासन के विकास यात्रा को अध्ययन की दृष्टि से पॉच काल खण्डों में विभाजित कर देखा जा सकता है। जो इस प्रकार है : प्रथम चरण :राजनीति प्रशासन द्विभाजन काल (1887–1926) , द्वितीय चरण :

प्रशासन के सिद्धांतों का स्वर्ण काल (1927–1937), तृतीय चरण : चुनौतियों का काल (1938–1947), चतुर्थ चरण : पहचान की संकटावस्था का काल (1948–1970) , पंचम चरण : ,अन्तर्विषयक अध्ययनों का काल (1971 से वर्तमान तक)।

5. एक स्वतंत्र अध्ययन विषय के रूप में लोक प्रशासन की शुरूआत वुडरो विल्सन द्वारा सन् 1887 में एक त्रैमासिक पत्रिका में लिखे उनके लेख "The Study of Administration" से हुई है।
6. वुडरो विल्सन को लोक प्रशासन का जनक माना जाता है।
7. हर्बर्ट साइमन ने पारम्परिक प्रशासकीय सिद्धान्तों को ''लोक प्रशासन की कहावते'' की संज्ञा देता है।
8. भारत में लोक प्रशासन के विकास के लिए 1949 में भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की स्थापना दिल्ली में हुई।
9. रॉबर्ट ड्हॉल ने कहा कि जब तक लोक प्रशासन का अध्ययन तुलनात्मक नहीं होता, तब तक इसका विज्ञान होनें का दावा खोखला है
10. विकास प्रशासन नामक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एक भारतीय प्रशासक यू.एल.गोस्वामी द्वारा किया गया ।
11. लोक चयन दृष्टिकोण (Public Choice Approach) का प्रमुख समर्थक विन्सेन्ट ऑस्ट्रम है।
12. नव–लोक प्रबन्ध शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग क्रिस्टोफर हुड ने किया।
13. सन् 2008 में तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन सिराक्यूज विश्वविद्यालय, अमेरिका द्वारा आयोजित किया गया। प्रथम व द्वितीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन क्रमशः 1968 व 1988 में हुआ।
14. सुशासन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग शिकागो विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री मिल्टन फ्राइडमैन ने अच्छे शासन के लिए सरकार की सीमित भूमिका के रूप में किया।
15. भारत में सर्वप्रथम लोक प्रशासन को अध्ययन–अध्यापन के एक विषय के रूप में स्थापित करनें का श्रेय वी.के.मेनन के नेतृत्व में लखनऊ विश्वविद्यालय को जाता है।
16. लोक प्रशासन को शैक्षिक वैधता 1949 में सर्वप्रथम तब मिली जब नागपुर विश्वविद्यालय नें एक पृथक विभाग स्थापित किया और इसके पहले विभागाध्यक्ष स्व. प्रो. महादेव प्रसाद शर्मा (Prof. M.P. Sharma) भारत में लोक प्रशासन के पहले प्रोफेसर थे। जिनको भारतीय लोक प्रशासन का जनक कहा जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न :

1. फेडरलिस्ट ग्रन्थ का लेखक कौन है ?
(अ) विलोबी (ब) टेलर (स) न्यूमैन (द) हैमिल्टन

2. The study of Administration किसकी कृति है?
(अ) वुडरो विल्सन (ब) विलोबी
(स) एल. डी. व्हाइट (द) वाल्डो

3. आधुनिक लोक प्रशासन का जनक किसे माना जाता है ?
(अ) मैक्स वेबर (ब) एल. डी. व्हाइट
(स) वुडरो विल्सन (द) फ्रेंक जे. गुडनाऊ

4. Politics and Administration नामक पुस्तक के लेख है।
(अ) एल डी व्हाइट (ब) वुडरो विल्सन
(स) फ्रेंक जे. गुडनाऊ (द) गुलिक

5. Administrative Behaviour नामक पुस्तक के लेखक कौन है ?
(अ) गुलिक (ब) हर्बर्ट साइमन
(स) उर्विक (द) रार्बट डहाल

6. तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मलेन का वर्ष है।
(अ) 2008 (ब) 1988
(स) 1968 (द) 1994

7. भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की स्थापना किस वर्ष की गई ?
(अ) 1953 (ब) 1935
(स) 1954 (द) 1945

8. लोक प्रशासन के अध्ययन विषय के रूप में विकास में ''स्वरुप की संकटावस्था'' किस काल को कहा जाता है ?
(अ) प्रथम (1887–1926) (ब) द्वितीय (1927–1937)
(स) तृतीय (1938–1947) (द) चतुर्थ (1948–1970)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. एक अध्ययन विषय के रुप में लोक प्रशासन का जन्मदाता किसे कहा जाता है ?
2. लोक प्रशासन के अध्ययन विकास को कितने चरणों में बांटा गया है ?
3. एल. डी. व्हाइट द्वारा रचित कौनसी पुस्तक है जिसे लोक प्रशासन की प्रथम पाठ्य पुस्तक माना जाता है?4. लोक प्रशासन का चतुर्थ चरण स्वरुप की संकटावस्था क्यों कहलाता है ?
5. नवीन लोक प्रशासन क्या है ?
6. विकास प्रशासन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस भारतीय प्रशासक ने किया ?
7. हर्बर्ट साइमन की महत्वपूर्ण कृति का नाम लिखिए ?

लघूतरात्मक प्रश्न :

1. संयुक्त राज्य अमेरिका में लोक प्रशासन के उदय एंव विकास को प्रभावित करने वाले दो कारको का उल्लेख कीजिए?

2. लोक प्रशासन विषय के विकास के प्रथम चरण को वर्णित कीजिए ?
3. नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएँ बताइए?
4. तृतीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन पर एक टिप्पणी लिखिए ?
5. नवीन लोक प्रशासन के लक्ष्यों का मूल्यांकन कीजिए?
6. नव–लोक प्रबन्ध को परिभाषित कीजिए?
7. भारतीय लोक प्रशासन संस्थान. की स्थापना क्यों व कब हुई?
8. भारत में उन तीन विश्वविद्यालयों के नाम बताइये जहॉ लोक प्रशासन विषय का अध्ययन होता है?
9. राजस्थान में लोक प्रशासन विषय की विकास यात्रा पर टिप्पणी लिखिए ?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. लोक प्रशासन के अध्ययन के विकास यात्रा के प्रमुख चरणें को संक्षेप में समझाइए?
2. नवीन लोक प्रशासन की शुरुआत के लिए उत्तरदायी कारकों का वर्णन कीजिए?
3. एक विषय के रुप में भारत में लोक प्रशासन की विकास यात्रा का वर्णन कीजिए?
4. नव–लोक प्रबन्ध पर एक टिप्पणी लिखिए ?

उत्तरमाला :

1. (द)	2. (अ)	3. (स)
4. (स)	5. (ब)	6. (अ)
7. (स)	8. (द)	